श्री जगदम्बा काली आरती

|| आरती श्री जगदम्बा काली जी की ||

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेर ही गुण गायें भारती,ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ।

तेर भक्त जनो पर मैया भीड़ पड़ी है भारी, दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी ।
सौ सौ सिंघो से है बलशाली, दस दस भुजाओं वाली, दुष्टों को पल में संघारती ।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ।

माँ बेटे की है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता, पूत कपूत सुने है पर ना माता सुनी कुमाता ।
सबपे करुना दरसाने वाली,अमृत बरसाने वाली, दुखिओं के दुखड़े निवारती ।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ।

नहीं मांगते धन और दौलत ना चांदी ना सोना, हम तो मांगे माँ तेरे मन में एक छोटा सा कोना ।
सब की बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली, सतियों के सत को सवारती ।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ।

चौदस के दिन तेरे भवन पे भीड़ लगे है भारी, जो कोई मांगे सोई मिलता कहती दुनिया सारी |
मैया तू है देने वाली , ना कोई आवे खाली भक्तो के कारज तू ही सारती।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ॥

॥ इति जगदम्बा काली आरती सम्पूर्ण ॥